B.A. (Hons) Part I
Philosophy Paper II
Topic Nature of Philosophy.

Dr. Sachidanand Prasad
Dept. of Philosophy.
R.R.S. College, Mokama

दर्शन को अंग्रेजी में Philosophy कहा जाता है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है — Love of wisdom. अर्थात ज्ञान के प्रति प्रेम। दर्शन का प्रारम्भ जिज्ञासा से होता है और यह जिज्ञासा समग्र विश्व तथा समस्त जीवन से संबंधित कुछ मूलभूत प्रश्नों के उत्तर के संबंध में होती है। Philosophy की परिभाषा देते हुए कहा गया है। — Philosophy is the Interpretation of Life and Experience as a whole.

अर्थात जीवन और अनुभव की समग्रता में अध्ययन करना दर्शनशास्त्र कहलाता है।

परन्तु, भारतीय दर्शन में ऐसा माना जाता है कि भारतीय दर्शन का प्रारम्भ मात्र जिज्ञासा से

नहीं हुआ है बल्कि इसका प्रारंभ एक व्यवहारिक समस्या से हुआ है जो जीवन तथा जगत में व्याप्त अतीम दुःख से छुटकारा पाना है। अतः दर्शन इन्हीं दुःखों से छुटकारा पाने का एक प्रयास है। यहाँ एक बात याद रखने योग्य यह है कि भारतीय दर्शन विश्व तथा जीवन के स्वरूप को उसकी समग्रता में ही समझने का प्रयास ही है।, मूल ही लक्ष्य इसए है। विश्व और जीवन के स्वरूप को भारतीय दर्शन में समझने की चेष्टा सिर्फ जिज्ञासा की शान्ति के लिए नहीं बल्कि दुःखों से छुटकारा पाने के लिए किया जाता है। इसप्रकार पाश्चात्य दर्शन की पद्धति मुख्यतः बौद्धिक है क्योंकि इसमें बौद्धिक तर्क-वितर्क, विचार-विमर्श के द्वारा समझने की चेष्टा की जाती है कि विश्व तथा जीवन का मौलिक स्वरूप क्या है? परन्तु भारतीय दर्शन की पद्धति साक्षात्कार की पद्धति है

दर्शन विश्व तथा जीवन का अध्ययन उनकी समग्रता में कुछ इस अर्थ में करता है कि इन दोनों से संबंधित एक अति सामान्य तथा आधारभूत

स्तर पर जो अनेको प्रश्न विचारशी चिन्तनशील मनुष्य के सामने उठते है उनका उत्तर देने का प्रयास करता है। जैसे - विश्व की उत्पत्ति कैसे हुई? इसके निर्माण मे मौलिक रूप से कौन - कौन से तत्त्व निहित है? इनकी क्रियाशीलता किन बातों पर आधारित है? इनका कोई लक्ष्य है या नहीं और यदि है तो वह क्या है? जीवन का वास्तविक स्वरूप क्या है और इसकी परिणति कहाँ होती है? क्या मृत्यु ही इसका अंत है या और कुछ? इत्यादि अनेको ऐसे प्रश्न है जो विश्व तथा जीवन से संबंधित मौलिक और आधारभूत प्रश्न है। दर्शन विश्व तथा जीवन की उनकी समग्रता में अध्ययन के सिलसिले में वस्तुतः इन्ही के उत्तर से संबद्ध होता है क्योंकि ये सभी मौलिक प्रश्न है। भारत मे साक्षात अनुभूति को दर्शन का आधार माना गया है लेकिन इन साक्षात अनुभूति के अन्तर्गत सिर्फ इन्द्रियानुभूति ही सम्मिलित नही है बल्कि उससे अधिक महत्वपूर्ण अन्तःप्रज्ञात्मक अथवा रहस्यात्मक अनुभूति को श्रेष्ठ माना गया है यही कारण है कि भारत मे एक नही बल्कि अनेक दर्शन मौजूद हैं।